महात्मा गाँधी का इतिहास चिन्तन

* डा0 विकास कुमार सिंह

इतिहास क्या है?इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। कुछ विद्वानों ने इतिहास के स्वरूप को कहानी[1] तो किसी ने सामाजिक विज्ञान तथा किसी ने ज्ञान माना है। ई0आर0 इल्टन ने अतीत–वर्तमान के मध्य सेतु माना है। इस प्रकार इतिहास चिन्तन में व्यक्ति का महत्व सबसे अधिक होता है। वह व्यक्ति ही उस युग का महापुरुष बनता है जो उस युग की आकांक्षाओं को शब्द दे सके। महापुरुषों के अभाव में सम्भवतः भावी घटनाओं का संकेत जनसामान्य तक नहीं पहुँच पाता। इतिहास गवाह है कि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम किसी महापुरुष के अभाव में असफल रहा जबकि महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जो भी आन्दोलन हुए वे काफी हद तक सफल रहे।[2]

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई0 को परम्परागत सनातन धर्म मानने वाले परिवार में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा पोरबन्दर में हुई थी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह इंग्लैण्ड गये। बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त कर एक व्यापारी के मुकद्में की पैरवी करने के लिये वे 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये और वहाँ अंग्रेजों द्वारा रंगभेद की नीति के कारण अप्रवासी भारतीयों पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध 'सत्याग्रह' और 'अहिंसा' का सफल प्रयोग कर 1914 में भारत लौटे।[3] यहाँ गोपाल कृष्ण गोखले से राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्होंने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। 30 जनवरी 1948 को दिल्ली की एक प्रार्थना सभा में उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। आज उन्हें 'राष्ट्रपिता' का गौरव पूर्ण सम्मान प्राप्त है। सन् 1920 से लेकर 1948 तक का काल खण्ड अनेक इतिहासकारों द्वारा भारतीय इतिहास में गाँधी जी की संज्ञा से विभूषित किया गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विचारों तथा उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलनों की ऐतिहासिक दृष्टि से

* प्रवक्ता (इतिहास), एम0बी0डी0 लॉ कालेज, लखनऊ

समीक्षा की गयी तथा आधुनिक भारत के इतिहास पुरुष के रूप में उनके महत्व को स्वीकार किया गया।

भारत में आधुनिक इतिहास लेखन की परम्परा अंग्रेजों के शासन की स्थापना के बाद प्रारम्भ हुई। इस इतिहास लेखन का उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन के औचित्य को सिद्ध करना तथा उसे नैतिक समर्थन देना था। यह इतिहास सम्राटों और महारानियों का इतिहास था इसलिये महात्मा गाँधी ने अपने युग के प्रचलित इतिहास के प्रति कोई रुचि प्रदर्शित नहीं की किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि गाँधी जी का कोई इतिहास के प्रति चिन्तन नहीं था। प्रत्येक व्यक्ति अपने इतिहास का उत्पादक होता है और महात्मा गाँधी ने भी भारतीय इतिहास के स्रोतों का अध्ययन किया और उसी ने उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रभावित हुआ।

चिन्तन के क्षेत्र में गाँधी जी ने कोई मौलिक आविष्कार नहीं किया बल्कि उन्होंने कुछ उपनिषदों से ग्रहण किया, कुछ गीता से, कुछ रामायण से, कुछ पौराणिक ग्रन्थों से, कुछ महावीर और गौतम बुद्ध से तथा कुछ मध्य कालीन वैष्णव सन्तों से विचारों को ग्रहण किया तथा उसे अपने आचरण में उतारा। महात्मा बुद्ध के बाद महात्मा गाँधी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय लोकमानस का संवेदना के स्तर पर स्पर्श किया था। गौतम बुद्ध और गाँधी जी के व्यक्तित्व में अनेक समानतायें दिखाई देती हैं। दोनों में भोगमय जीवन का तिरस्कार कर त्यागमय जीवन को ग्रहण किया। दोनों ने ही सामाजिक तथा राजनीतिक चिन्तन धारा को प्रवाहित किया। महात्मा गाँधी ने अपने जीवन काल में अहिंसात्मक आन्दोलन के माध्यम से भारत को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाकर सत्याग्रह की शक्ति को प्रमाणित कर दिखाया। संसार के अनेक देशों में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाले लोगों ने गाँधी जी के मार्ग से प्रेरणा ग्रहण की। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये पाँच 'यम' वैदिक ब्राह्मण परम्परा के साथ–साथ पंचशील के रूप में बौद्ध धर्म तथा पंच अणुव्रत और पंच महाव्रतों के रूप में जैन परम्परा में मिलते हैं।[4] इन्हीं परम्परागत भारतीय चिन्तन के मूलभूत सिद्धान्तों (सत्य,

अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य आदि) को लेकर उनका सफलतापूर्वक प्रयोग करने का प्रयास किया और इन्हीं पवित्र साधनों को अपनाकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हुए। इनके अतिरिक्त गाँधी जी के जीवन को श्रीमद्भगवद्गीता ने सर्वाधिक प्रभावित किया जिसने उन्हें कर्मयोगी बनाया। उन्होंने स्वयं कहा जब शंकाएं मुझे घेर लेती हैं, जब निराशा मेरी ओर झाँकती है और क्षितिज में प्रकाश की एक किरण भी दिखायी नहीं देती तब मैं भगवद्गीता का आश्रय लेता हूँ।

गाँधी जी ने स्वयं कहा था कि गाँधी जैसी कोई वस्तु मेरे मस्तिष्क में नहीं है। मैने कोई सम्प्रदाय प्रवर्तक होने का या तत्व ज्ञानी होने का कभी दावा नहीं किया, मेरा यह प्रयास भी नहीं है। मैने किसी नवीन सत्य की खोज नहीं की है, अपितु सत्य को जैसा मैं जानता हूँ, तद्नुरूप ही चलने का और अन्य लोगों को बताने की चेष्टा करता हूँ। सत्य और अहिंसा इतने पुराने हैं जितने की पर्वत। मैनें इन दोनों का इतनी विस्तृत सीमा में प्रयोग करने का प्रयत्न किया है जितना कि मैं कर सकता था। आप इसे 'गाँधीवाद' के नाम से पुकारेंगे, इसमें कोई वाद नहीं है। सत्य का साक्षात्कार स्वयं आत्मा को होता है। आत्म–निर्णय ही सत्य की कसौटी है। तुम्हारी अंतर्आत्मा जो कहती है वही सत्य है। सत्य के प्रति ही आग्रह करना अर्थात सत्य के पक्ष में बने रहना सत्याग्रह है। सत्याग्रह अहिंसात्मक होना चाहिए। अहिंसक समाज के लिए अहिंसक राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा धर्म आवश्यक है। मानव लगातार हिंसा की स्थिति में नहीं रह सकता है। यह किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। हिंसा अपने आप में एक समस्या है। हिंसा से हिंसा बढ़ती है क्योंकि इससे घृणा की वृद्धि होती है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। दुर्बल व्यक्ति के लिए अहिंसा नहीं है।[5] जो वीर हैं, निडर हैं, और जिसमें दुःख सहन करने का सामर्थ्य है वही अहिंसक हो सकता है। गाँधी जी के अनुसार जब मेरे सम्मुख केवल दो ही विकल्प रह जायेंगे, कायरता और हिंसा, तो मैं हिंसा के लिए सलाह दूँगा। कायरतापूर्ण शान्ति से वीरतापूर्ण युद्ध अच्छा है। गाँधी जी

अतिवादी अहिंसा के पक्ष में नहीं थे। गाँधी जी ने गीता का वरण किया अतः युद्ध की आपात स्थिति में गाँधी जी हथियारों के विरुद्ध नहीं थे। साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध छेड़े गये स्वतन्त्रता संग्राम में गाँधी जी ने शस्त्र त्याग को महत्व देकर अहिंसा को जिस तरह अपनाया उसे एक सोची–समझी रणनीति कहा जा सकता है इसलिए उन्होंने यह बात कही थी कि शस्त्रों की लड़ाई में भारत अंग्रेजों की बराबरी नहीं कर सकता, अतः यह उचित होगा कि शत्रु का हृदय परिवर्तित करके स्वतंत्रता संग्राम लड़ा जाय।[6]

गाँधी चिन्तन का उद्भव मूलतः सनातन धर्म की पृष्ठभूमि में हुआ है। इनकी यह मान्यता थी कि जीवन के हर क्रियाकलाप में धर्म को स्थान दिया जाना चाहिए। गाँधी जी धर्म को बहुत व्यापक अर्थों में लेते थे। उनके अनुसार धर्म मशीनी नियमों का संग्रह नहीं है, यह एक जीवित शक्ति है जो कि समाज के साथ ही जन्म लेती है। गाँधी जी के अनुसार धर्म का अभिप्राय अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का उचित ढंग से निर्वाह करना है इस प्रकार वह धर्म को अच्छा मानते थे।

गाँधी जी की आर्थिक विचारधारा समकालीन अर्थशास्त्रियों से अलग थी। गाँधी जी का विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय के भीतर ही खर्च पूरा करने की कला सीखनी होगी और इसे सम्पादित करने के दो रास्ते हैं। एक तो अपनी आवश्यकताओं को कम कर देना और दूसरा अपना काम धन्धा इस विधि से चलाना कि कभी सिर पर ऋण न चढ़े। एक बार गाँधी जी ने कहा था कि 'मेरा प्रयत्न स्वेच्छापूर्ण सादगी, गरीबी और धीमी गति में सौन्दर्य–दर्शन का है––– । आवश्यकतायें बढ़ाने का मुझे कोई मोह नहीं।[7] वे तो हमारी आन्तरिक जीवन को तेजहीन करके विनिष्ट ही कर देती हैं।' गाँधी जी का विचार था कि समाज के सभी व्यक्तियों की न्यूनतम आवश्यकतायें पूरी हों। वे चाहते थे कि समाज में धन का विभाजन समान रूप से हो। वह वर्ग सहयोग और वर्ग सामंजस्य के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। उनका विचार था कि यदि हम अमीरों को बता सके कि उनकी

अमीरी तभी तक सुरक्षित रह सकेगी जब तक वे गरीबों की भलाई के लिए उसका उपयोग करेंगे। गाँधी जी ने कहा था कि 'अगर मुझे सत्ता प्राप्त होगी, तो मैं पूँजीवाद को अवश्य समाप्त कर दूँगा, लेकिन पूँजी को नहीं। जाहिर है कि मैं पूँजीपतियों को भी खत्म नहीं करूँगा। मेरा निश्चित मत है, कि पूँजी और श्रम में सामंजस्य स्थापित करना बिल्कुन सम्भव है। मैंने कुछ एक मामलों में ऐसा होते देखा भी है वह सब पर लागू हो सकती है। मैं नहीं मानता कि पूँजी अपने आप कोई बुरी चीज है।' एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा 'पूँजीपतियों और श्रमिकों को एक दूसरे के पूरक बन जाना चाहिये। उन्हें एक विशाल परिवार के समान होना चाहिये जिसमें वे एकता व सामंजस्य के साथ विश्वास कर सकें।' उनका मत था कि 'मैं किसी ऐसे समय की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें एक व्यक्ति दूसरे से धनी होगा। लेकिन मैं ऐसे समय की कल्पना अवश्य करता हूँ जब अमीर आदमी गरीबों का शोषण कर अमीर बनने से घृणा कर देंगे और गरीब आदमी अमीरों से घृणा करना बन्द कर देंगे।'[8]

गाँधी जी के अनुसार केन्द्रीकरण से हिंसा और सर्वाधिकारवाद को प्रोत्साहन मिलता है। इसी वजह से वह बड़े–बड़े उद्योगों, मशीनों और केन्द्रोन्मुखी राजसत्ता के विरोधी थे। गाँधी जी अधिक से अधिक आत्मनिर्भरता और विकेन्द्रित राजसत्ता सहित ग्राम पंचायतों की स्थापना का समर्थन करते थे। उनका विश्वास था कि सर्वश्रेष्ठ शासन वही है जो न्यूनतम शासन करता है। गाँधी जी का विचार था कि स्वस्थ समाज के अन्दर चन्द आदमियों में धन का केन्द्रित हो जाना और लाखों का बेकार होना एक महान् सामाजिक अपराध या रोग है जिसका इलाज अवश्य होना चाहिए।' वे कहते थे कि अहिंसक राज्य की प्राप्ति तभी हो सकेगी जब अमीरी व गरीबी के बीच खाई मिटे। गाँधी जी के अनुसार, 'अगर सम्पत्ति का और सम्पत्ति से होने वाली सत्ता का खुशी से त्याग नहीं किया जायेगा तो हिंसक क्रान्ति और रक्तपात अवश्यम्भावी है।'[9] गाँधी जी के विचार से उपयोगी वस्तुएँ सबको ठीक उसी प्रकार प्राप्त होनी चाहिए जिस प्रकार कि

ईश्वर की वायु और पानी सबको प्राप्य है। उन्हें दूसरों के शोषण का साधन बना लेना उचित नहीं है। इसके लिये गाँधी जी ने बताया यदि उत्पादन के साधनों और जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं पर जनता का नियंत्रण हो जाये तो यह आदर्श स्थिति प्राप्त की जा सकती है। गाँधी जी के आदर्श समाज में हर आदमी को अपने पास उतना ही रखना चाहिए जितना उसे जरूरी हो तथा अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करना चाहिये। आर्थिक स्वतंत्रता के विषय में एक स्थान पर कहा कि 'भारत की आर्थिक स्वतन्त्रता का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति के अपने ही सचेतन प्रयत्न के बल पर व्यक्तिशः प्रत्येक स्त्री पुरुष का आर्थिक उत्थान। उस व्यवस्था में सभी स्त्री–पुरुषों को पर्याप्त मात्रा में वस्त्र सुलभ रहेगा, मात्र लंगोटी ही नहीं बल्कि जिनको हम आवश्यक मानते हैं वे सभी वस्त्र और पर्याप्त भोजन सुलभ रहेगा, जो आज करोड़ों को नसीब नहीं है। गाँधी जी अच्छी तरह समझते थे कि भारत गाँवों का देश है, यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। उनकी ग्राम स्वशासन की मान्यता ऐसे पूर्ण गणराज्य की मान्यता थी जो अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने पड़ोसियों से स्वतन्त्र हों। उनका कहना था कि पंचायत स्तर पर ही सिर्फ प्रत्यक्ष चुनाव कराये जायें। पंचायत के स्तर पर जिन्हें हम चुनें, वे सब मिलकर प्रखण्ड, जिला राज्य एवं केन्द्र को चुनें जिसमें मूलाधार गाँव ही रहेगा। ग्राम स्वराज्य में सत्ता एवं उद्योग आदि सभी का मूलाधार गाँव ही रहेगा जो काम पंचायत नहीं कर सकेगी, वह प्रखण्ड या तहसील को दिया जायेगा फिर जिला, राज्य या केन्द्र को। इस प्रकार केन्द्र का बोझ हल्का हो जायेगा। प्रशासन पर बोझ कम हो जायेगा। अतः कार्य में कुशलता आयेगी।'[10]

मशीन को गाँधी जी एक महान पर भयानक आविष्कार मानते थे। वे कहते थे कि मैं मशीन के विरोध में नहीं बल्कि मशीन के पागलपन के विरोध में हूँ– पागलपन इसलिये कि वे इससे श्रम की बचत करना चाहते हैं इससे हजारों लोग बेकार हो जायें और खुली सड़को पर भूख से तड़प कर मरने के लिये फेंक दिये जायें। मैं श्रम और सामग्री दोनो की बचत चाहता

हूँ। लेकिन ऐसा मैं केवल मुट्ठीभर लोगों के लिए नहीं बल्कि सबके लिये चाहता हूँ। आज मशीनें लाखों की पीठ पर सवार होना चाहती हैं इसके पीछे श्रम को बचाने के लिए कोई दार्शनिक पहलू नहीं है बल्कि लोभ की भावना है। मैं इस व्यवस्था के विरोध में अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ लड़ रहा हूँ। उनके अनुसार यन्त्रों की प्रवृत्ति, मानव के अंग–प्रत्यंग को काम के अभाव में जड़ और बेकार बना देने की नहीं होनी चाहिए। गाँधी जी ने कहा 'एक ऐसी स्थिति की कल्पना की जा सकती है, जब मनुष्य द्वारा अविष्कृत मशीनें अन्त में सभ्यता को निगल जायें। यदि मनुष्य मशीन पर नियंत्रण रखता है तो वह ऐसा नहीं करेंगी परन्तु यदि मनुष्य मशीनों पर अपना नियंत्रण खो देता है, तो वे निश्चय ही सभ्यता और हर चीज को निगल जायेंगी'। गाँधी जी ने सिंगर की सिलाई जैसी उपयोगी मशीनों का विरोध नहीं किया, उनका कहना था कि हमें उन मशीनों, जिनका प्रयोग लाखों स्त्री–पुरूष कर सकें, का हर प्रकार से स्वागत करना चाहिये।

इस प्रकार गाँधी जी का इतिहास के प्रति चिन्तन उनकी ऐतिहासिक समझ और वैज्ञानिक विवेक का समन्वित रूप है। वह देश की जनता को अपने सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी देखकर देश के लिये त्याग की भावना जाग्रत कर स्वराज्य दिलाना चाहते थे। गाँधी जी का आदर्श समाज राज्यहीन होगा। उसमें विभिन्न वर्णों का अस्तित्व नहीं रहेगा, उसमें आत्मनिर्भर ग्राम होंगे जो स्वेच्छापूर्ण सहयोग के आधार पर शान्तिपूर्ण और गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।[11] गाँधी के सपनों का भारत रामराज्य था, जिसका स्वरूप है 'नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना' इसमें सौरभ और शीतलता है। गाँधी जी हृदय परिवर्तन, जीवन परिवर्तन और समाज परिवर्तन में विश्वास करते थे। मानव जीवन समग्र है। सर्वोदय जीवन का समग्र दर्शन है।

संदर्भः–

1. ए0एल0 राउजः द न्यूज ऑफ हिस्ट्री, पृ0–52
2. प्रो0 गोविन्द चन्द्र पाण्डेयः इतिहास का स्वरूप एवं सिद्धान्त,

पृ0–132
3. शेक अलीः ए हिस्ट्री इट्स पर्पज एण्ड मैथेड, पृ0–59
4. ई0एच0 कारः व्हाट इज हिस्ट्री, पृ–46
5. ई0आर0 इल्टनः द प्रेक्टिस ऑफ हिस्ट्री, पृ0–167
6. जे0 डवल्यू0 एफ0 हीगलः फिलासफी ऑफ राइट, पृ0295
7. प्रो0 जे0एस0 मिलः रूल ऑफ इन्डीविजुअल इन हिस्ट्री, पृ0–100
8. गाँधी वाड्मय, खण्ड–11, पृ0 390
9. महात्मा गाँधीः जीवन और चिन्तन, पृ0 395
10. राम सिंह, गाँधी–विचार, पृ0 59–58
11. विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी; महात्मा गाँधी व्यक्ति और विचार, पृ0 177